Swami Vivekananda: Indian Youth and Values Education
(स्वामी विवेकानंदः भारतीय युवा और मूल्य शिक्षा)

Dr. Deepshikha Namdev
* vice principal, Balaji institute of education,
rangbadi kota rajasthan, India
Corresponding Author: deepshikhanamdev@gmail.com

DOI: 10.52984/ijomrc2205

Abstract:

स्वामी विवेकानंद (12 जनवरी, 1863 - 4 जुलाई, 1902) को भारत के सबसे प्रभावशाली आध्यात्मिक शिक्षाविद् और विचारक में से एक माना जाता है। वह रामकृष्ण परमहंस के शिष्य और रामकृष्ण मठ और रामकृष्ण मिशन के संस्थापक थे। उनका निडर साहस, युवाओं को उनके सकारात्मक उपदेशों, सामाजिक समस्याओं पर उनके व्यापक दृष्टिकोण और वेदांत दर्शन पर अनगिनत व्याख्यान और प्रवचनों के लिए उन्हें लोगों द्वारा एक प्रतीक माना जाता है। और कहा है कि,

"शिक्षा वह मात्रा नहीं है जो आपके मस्तिष्क में डाली जाती है और वहां दंगे करवाती है, जो आपके पूरे जीवन में अपचित होती है। हमें जीवन-निर्माण, मानव-निर्माण, चरित्र-निर्माण, विचारों को आत्मसात करना चाहिए।" यह ठीक ही कहा गया है कि "स्वामी का मिशन राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दोनों था।" उन्होंने वेदांत की आध्यात्मिक नींव पर शांति और मानव भाईचारे को बढ़ावा देने का प्रयास किया। प्रस्तुत शोध-पत्र स्वामी विवेकानंद के जीवन मूल्य एवं आज के आधुनिक युग के युवाओं के मार्ग दर्शन पर आधारित है।

Key Words: सनातन, भारतीय, मूल्य शिक्षा

प्रस्तावनाः

स्वामी विवेकानंद का व्यक्तित्व देश के सामाजिक–आर्थिक और नैतिक ढांचे में व्याप्त बुराइयों के प्रति अपनी व्यापकता और गहरी संवेदनशीलता के लिए उल्लेखनीय था। उन्होंने अद्वैतवादी तप और समाज सेवा दोनों का उपदेश दिया। उनकी बौद्धिक दृष्टि बेहद स्पष्ट थी और वे भारत के इतिहास में प्रकट होने वाली धाराओं और क्रॉस–करंटों में आसानी से प्रवेश कर सकते थे। स्वामी विवेकानंद के व्याख्यानों और भाषणों के माध्यम से, कई युवा समाज सेवा और चरित्र निर्माण के विचारों से प्रेरित हुए। स्वामी विवेकानंद ने अपना जीवन समाज सेवा के महत्व पर युवाओं को पढ़ाने और मार्गदर्शन करने और चरित्र और नेता विशेषताओं के लिए आधार तैयार करने के लिए समर्पित कर दिया। गरीबों की सेवा की उनकी अवधारणा ने बनारस के कई युवाओं सहित कई युवाओं को प्रेरणा दीय इन युवाओं ने अंततः श्री रामकृष्ण विवेकानंद मिशन होम ऑफ सर्विस का गठन किया, जो आज भी मौजूद है। रामकृष्ण मिशन 1897 में अस्तित्व में आया और तब से पूरे भारत में काम करता है

और युवाओं को प्रेरित करता है। स्वामी विवेकानंद अपने पूरे जीवनकाल में युवाओं के लिए एक शक्तिशाली प्रेरणा थे और आज भी युवाओं को प्रेरित करते हैं।

राष्ट्रीय युवा दिवस

स्वामी विवेकानंद के जन्मदिन को राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में मनाया जाता है भारत सरकार ने 1985 से हर साल स्वामी विवेकानंद (अंग्रेजी कैलेंडर के अनुसार 12 जनवरी) के जन्मदिन को राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में मनाने का फैसला किया। भारत सरकार के संचार से उद्धृत करने के लिए,

''ऐसा महसूस किया गया कि स्वामी जी के दर्शन और वे आदर्श जिनके लिए उन्होंने जीना और काम करना भारतीयों के लिए प्रेरणा का एक बड़ा स्रोत हो सकता है।''

भारतीय पंचांग (विशुद्ध सिद्धांत पंचांग) के अनुसार स्वामीजी का जन्मदिन पौष कृष्ण सप्तमी तिथि को होता है, जो हर साल अंग्रेजी कैलेंडर की अलग–अलग तिथियों पर पड़ता है। रामकृष्ण मठ और रामकृष्ण मिशन के मुख्यालय के साथ–साथ उनके शाखा केंद्रों में पौष कृष्ण सप्तमी तिथि पर मंगलारती, विशेष पूजा, ध्यान, भक्ति गीत, धार्मिक प्रवचन, संध्याराती, आदि के साथ स्वामी विवेकानंद का जन्मदिन मनाया जाता है। और राष्ट्रीय युवा दिवस (12 जनवरी) के रूप में 12 जनवरी को जुलूस, भाषण, पाठ, संगीत, युवा सम्मेलन, सेमिनार, योगासन प्रस्तुति, निबंध–लेखन में प्रतियोगिताओं, पाठ, भाषण, संगीत, खेल आदि के साथ मनाया जाता है। युवा शिक्षा की आवश्यकता के बारे में बात करते हुए, जे.एस. राजपूत कहते हैं, "युवाओं को जीवन के विशाल कैनवास को विचारों और गतिविधियों के साथ इंगित करना सिखाया जाना चाहिए जो उन्हें अपने और अपने साथी पुरुषों के लिए भविष्य की कल्पना करने में मदद कर सकें।[प]

उन्हें यह जानने का प्रयास करने की आवश्यकता है कि क्या वास्तविक है और क्या असत्य। उन्हें इस बात की सराहना करने के लिए भी निर्देशित किया जा सकता है कि सत्य की खोज ही वह अंतिम लक्ष्य है जिसे केवल हर पल में लगातार बदल रही सभी की क्षणभंगुर प्रकृति को समझने के बाद ही प्राप्त किया जा सकता है। भारतीयों के इतिहास और विरासत के साथ एक परिचित उन्हें निरंतरता की भावना दे सकता है और उन्हें जिम्मेदारी लेने के लिए प्रेरित कर सकता है वंश को आगे ले जाने के लिए। इन सबसे ऊपर, सांस्कृतिक आधार और शास्त्र उन्हें उदात्त, अच्छाई और सुंदरता के कब्जे की भावना को प्रेरित और प्रेरित कर सकते हैं, जिसे उन्हें आत्मसात करने और आंतरिक करने की आवश्यकता है। "[पप]

जैसा कि विवेकानंद मानव मन और बड़े पैमाने पर मानव समाज के एक महान पर्यवेक्षक थे। वह समझते थे कि किसी भी सामाजिक परिवर्तन के लिए अत्यधिक ऊर्जा और इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है। इसलिए उन्होंने युवाओं से न केवल अपनी मानसिक बल्कि शारीरिक ऊर्जा को भी बढ़ाने का आह्वान किया। वह लोहे की मांसपेशियों के साथ–साथ नसों की भी चाहता था वह चाहता था कि युवाओं में अदम्य इच्छाशक्ति और समुद्र को पीने की शक्ति हो। वे चाहते थे कि युवाओं को सामाजिक कार्यकर्ताओं के सामने आने वाली चुनौतियों का सामना करने के लिए शारीरिक और मानसिक दोनों रूप से तैयार किया जाए। वह आगे आने वाले नुकसानों के बारे में युवाओं को चेतावनी देने में भी काफी व्यावहारिक थे और जिस तरह से समाज इस तरह के प्रयासों के प्रति प्रतिक्रिया करता है। उन्होंने कहा, ''सभी अच्छे कामों को तीन चरणों से गुजरना पड़ता है। पहले उपहास आता है, फिर विरोध का चरण, और अंत में स्वीकृति आती है।''[पपप]

स्वामी विवेकानंद के उपदेश

स्वामी विवेकानंद हम सभी के लिए प्रेरणा और प्रेरणा के स्त्रोत हैं, चाहे हम छात्र हों, शिक्षक हों, आम लोग हों या कोई अन्य पेशेवर, उन्होंने बहुत कुछ कहा जिसे सभी के लिए बहुत ही सरल उद्धरणों में स्वरूपित किया जा सकता

है। यहाँ स्वामी विवेकानंद के विचारों का एक सुंदर संग्रह प्रस्तुत है[पअ]–

- खड़े हो जाओ, साहसी बनो, मजबूत बनो। सारी जिम्मेदारी अपने कंधों पर लो, और जानो कि तुम अपने भाग्य के निर्माता खुद हो।
- उठो! जागो! और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए।
- अच्छा होना और अच्छा करना यही संपूर्ण धर्म है।
- शक्ति ही जीवन है, दुर्बलता ही मृत्यु है।
- सारी शक्ति तुम्हारे भीतर है, तुम कुछ भी और सब कुछ कर सकते हो। उस पर विश्वास करो, यह मत मानो कि तुम कमजोर हो। खड़े हो जाओ और अपने भीतर की दिव्यता को व्यक्त करो।
- आप जो सोचते हैं, वही आप होंगे। अगर आप खुद को कमजोर समझते हैं, तो आप कमजोर हैं।
- अपने बल पर खड़े होकर मरो, संसार में पाप है तो दुर्बलता है। सभी कमजोरियों से बचों, क्योंकि कमजोरी पाप है, कमजोरी ही मृत्यु है।
- न पैसा देता है, न नाम भुगतान करता है, न प्रसिद्धि, न ही सीखः यह चरित्र है जो अंतर की अडिग दीवारों को तोड़ता है।
- वह एक नास्तिक है जो खुद पर विश्वास नहीं करता है। पुराने धर्म ने कहा कि वह एक नास्तिक था जो ईश्वर में विश्वास नहीं करता है। नया धर्म कहता है कि वह नास्तिक है जो खुद पर विश्वास नहीं करता है।
- सबसे बड़ा पाप खुद को कमजोर समझना है।
- दुख आसक्ति से आता है, काम से नहीं।
- हम जो काम करते हैं, उसके साथ खुद को पहचानें, हम दुखी महसूस करते हैं, लेकिन अगर हम इसके साथ अपनी पहचान नहीं बनाते हैं, तो हम उस दुख को महसूस नहीं करते हैं।
- यदि आप समुद्र को पार करेंगे तो आपके पास लोहे की इच्छा होनी चाहिए। आपको पहाड़ों को भेदने के लिए काफी मजबूत होना चाहिए।
- एक विचार लो, उस एक विचार को अपना जीवन बनाओ, उसके बारे में सोचो, उसके सपने देखो, उसे जियो, मस्तिष्क, मांसपेशियों, नसों, अपने शरीर के हर हिस्से को उस विचार से भरा रहने दो और बस हर दूसरे विचार को छोड़ दो अकेले। इस तरह महान आध्यात्मिक दिग्गजों का उत्पादन होता है, अन्य केवल बात करने वाली मशीन हैं।
- आपके देश को नायकों की आवश्यकता है, नायक बनोय आपका कर्तव्य काम करते रहना है, और फिर सब कुछ अपने आप हो जाएगा।
- हर आदमी को महान बनाने के लिए, हर राष्ट्र को महान बनाने के लिए तीन चीजें आवश्यक हैं।
- अच्छाई की शक्तियों की पुष्टि।
- उन सभी की मदद करना जो अच्छा बनने और करने की कोशिश कर रहे हैं।
- स्वामी विवेकानंद भारत के युवाओं के लिए एक बेहतरीन आइकॉन होंगे।

भारतीय मूल्य प्रणाली[अ]

भारत की प्राचीन ज्ञान और मूल्य प्रणाली मानव जाति की महान विरासत हैं। हमने अपने इतिहास और संस्कृति में वापस ले लिया, हम पाते हैं कि हमारी शिक्षा प्रणाली, नेतृत्व मूल्य और ऋषियों द्वारा डिजाइन की गई प्रबंधकीय प्रक्रिया प्रेरणा और प्रेरणा के महान स्रोत हैं। वर्तमान

शिक्षा प्रणाली पश्चिमी लोकाचार पर आधारित है, जो मनुष्य के आंतरिक साधन, उसके मन और उसके जीवन के चमकाने और विकास की उपेक्षा करती है। यह जन्मजात देवत्व, अपने भीतर की उपेक्षा करता है और केवल शरीर, मन और बुद्धि पर ध्यान केंद्रित करता है। मन की एकाग्रता की शक्तियों को विकसित करने पर ध्यान की कमी और सहज पूर्णता, शांति और स्वयं के सुख के प्रकटीकरण की आवश्यकता की उपेक्षा करना, इसलिए, हमारे चरित्र और मूल्य को कम करने के लिए सीधे जिम्मेदार है। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान, आधुनिक भारत के कुछ महान नेताओं, जो शिक्षाविद भी थे, ने ब्रिटिश शिक्षा प्रणाली को चुनौती दी और शिक्षा के शक्तिशाली दर्शन विकसित किए ताकि छात्रों को न केवल भारतीय विरासत का पाठ प्रदान किया जा सके बल्कि उन्हें तैयार करने के लिए भी तैयार किया जा सके।

स्वामी विवेकानंद और मूल्य शिक्षा

एक दार्शनिक उपदेशक और सुधारक स्वामी विवेकानंद ने अपना पूरा जीवन मानवता के उत्थान के लिए समर्पित कर दिया। अपने विचार की गतिशीलता में उन्होंने मानव उत्कृष्टता के लिए शरीर और आत्मा के सुधार पर जोर दिया। पूरी दुनिया के लिए उनके प्रेरक भाषणों का केंद्रीय विषय मनुष्य था – उनकी वृद्धि, विकास और पूर्ति। उनके सभी उपदेशों और उपदेशों में शरीर, मन और आत्मा की उत्कृष्टता के लिए प्रयास करने के लिए कार्य और अधिक कार्य विशिष्ट थे।

शिक्षा का मुख्य उद्देश्य यह होना चाहिए कि बढ़ती हुई आत्मा को अपने आप में जो सबसे अच्छा है उसे बाहर निकालने में मदद मिले और इसे एक महान उपयोग के लिए परिपूर्ण बनाया जाए। पूर्णता का यह प्रयास परमात्मा के विकासवादी खेल का हिस्सा है। शैक्षिक उद्देश्य में सिर, हाथ और हृदय का विकास होता है। शिक्षा को व्यक्ति को शारीरिक, मानसिक, नैतिक और आध्यात्मिक रूप से विकसित करने में मदद करनी चाहिए। ऐसा आदर्श आदर्श शंकराचार्य, बुद्ध जैसे भारतीय विचारकों में पाया जा सकता है। स्वामी विवेकानंद। रवींद्रनाथ टैगोर, महात्मा गांधी, श्री अरबिंदो और अन्य। यह याद रखना चाहिए कि पश्चिम के विपरीत, भारत में शिक्षा, जीवन और धर्म आपस में जुड़े हुए हैं।

इस प्रकार शिक्षा के मूल्य पहलू को शिक्षा के उद्देश्यों के साथ निकट संपर्क में रखा जाता है। जैसा कि विवेकानंद कहते हैं कि,''शिक्षा वह मात्रा नहीं है जो मस्तिष्क में डाली जाती है और वहां दंगा करती है, अपचित, आपका सारा जीवन ... हमारे पास जीवन–निर्माण, मानव–निर्माण, विचारों का चरित्र–निर्माण आत्मसात होना चाहिए, चूंकि, कई भारतीय और पश्चिमी विचारकों ने अलग–अलग मूल्य प्रणाली को विकसित करने और लागू करने के लिए काम किया है।''

लेकिन वे अपने विचार या जीवन दर्शन तक ही सीमित हैं। लेकिन वर्तमान समय में हमें उन मानवीय मूल्यों की आवश्यकता है जिन्हें बिना किसी पंथ, राष्ट्र और क्षेत्र के प्रतिबंध के लागू किया जा सकता है। यह ठीक ही कहा गया है, ''आधुनिक समय में शिक्षा नौकरी तलाशने वालों के उत्पादन के कारखाने में बदल गई है। जीवन के उच्च परिप्रेक्ष्य की कमी के परिणामस्वरूप तथाकथित शिक्षित अधिक से अधिक श्आत्मकेंद्रितश हो गया है। परिणाम हम सभी के लिए है शिक्षित युवा निरंतर भय और तनाव में रहते हैं जो उन्हें अवसाद की ओर ले जा रहा है। इस स्थिति में युवाओं को एक रोल मॉडल की आवश्यकता है जो उन्हें इस निराशाजनक स्थिति से बाहर निकलने का रास्ता दिखा सके। रास्ता क्या है? इसे अपनाना है स्वामी विवेकानंद का शिक्षा का दर्शन। स्वामीजी आत्मा के प्रेरक थे।''[अप]

वर्तमान दुनिया में, अधिकांश देशों में औपचारिक स्कूली शिक्षा पर जोर दिया जाता है न कि मानव–निर्माण पर। नतीजा अराजकता और अराजकता है। यहां धन का अर्जन मूलभूत मानवीय मूल्यों पर हावी नहीं होना चाहिए। विवेकानंद एक द्रष्टा होने के कारण इस मानवीय पीड़ा के कारण को लंबे समय तक समझ सकते थे। बहुत पहले और मानव जाति की शांति और मुक्ति के लिए शिक्षा के अपने दर्शन का प्रचार किया। विवेकानंद ने शिक्षा पर कोई पुस्तक नहीं लिखी, उन्होंने इस विषय पर बहुमूल्य विचारों का योगदान दिया जो आज प्रासंगिक और व्यवहार्य हैं।

शोजी सिंह बताते हैं, ''स्वामी विवेकानंद ने एक ऐसी शिक्षा की परिकल्पना की थी, जो मनुष्य को योग्य और देवत्व को पूर्ण रूप से प्रकट करने में सक्षम बनाती है। उनका स्पष्ट आह्वान था।''[अपप] जीवन निर्माण, मानव–निर्माण, विचारों को आत्मसात करना चाहिए। हम वह शिक्षा चाहते हैं। जिससे चरित्र का निर्माण होता है। मन की शक्ति में वृद्धि होती है, बुद्धि का विस्तार होता है, और जिससे व्यक्ति अपने पैरों पर खड़ा हो सकता है। उन्होंने बिना किसी अनिश्चित शब्दों के आगे घोषणा की कि जाति और उस मामले के लिए राष्ट्र का उद्धार संभव है केवल पुरुष शिक्षा के साथ, एक लाख पुरुष और महिलाएं, पवित्रता के उत्साह से भरे हुए, प्रभु में शाश्वत विश्वास के साथ दृढ़, और गरीबों और गिरे हुए और दलितों के लिए अपनी सहानुभूति से शेर के साहस से उत्साहित होंगे। भूमि की लंबाई और चौड़ाई, मोक्ष के सुसमाचार का प्रचार, सहायता का सुसमाचार, सामाजिक उत्थान का सुसमाचार– समानता का सुसमाचार। पवित्रता का यह उत्साह और शेर का साहस ऐसी शिक्षा के साथ ही आता है, जो अनिवार्य रूप से आध्यात्मिक विकास या आत्म–ज्ञान की यात्रा से शुरू होता है। स्वामी विवेकानंद कहते हैं, ''सभी शिक्षा का आदर्श, सभी प्रशिक्षण, यह मानव निर्माण होना चाहिए। लेकिन, इसके बजाय हम हमेशा बाहर को चमकाने की कोशिश कर रहे हैं। जब अंदर नहीं है तो बाहर को चमकाने में क्या फायदा। इसे अंदर से पोषित करना, आकार देना और चमकाना और इसे ठीक से प्रकट करने में मदद करना ही मनुष्य द्वारा स्वामीजी की शिक्षा है। यह शिक्षा बाहर से मनुष्य के जैविक विकास को सुनिश्चित करती है, न कि बाहर–भीतर से समायोजन करने के प्रयास के रूप में जो अक्सर आंतरिक मनुष्य को अस्पष्टता और विस्मृति के कक्ष में बंद कर देती है।''[अपपप]

शिक्षा को प्रत्येक व्यक्ति को अपना आदर्श अपनाने और उसे पूरा करने का प्रयास करने में मदद करनी चाहिए। विवेकानंद के अनुसार, ''पुरुष चार सामान्य प्रकार के होते हैं–तर्कसंगत, भावनात्मक, रहस्यमय और कार्यकर्ता।'' तो इन विभिन्न प्रकार के पुरुषों की शिक्षा में विभिन्न तरीकों का पालन किया जाना है। विवेकानंद ने बहुत पहले ही महसूस कर लिया था कि शिक्षा उदार और हमेशा राष्ट्रीय तर्ज पर होनी चाहिए। शिक्षा में रूढ़िवादी और रचनात्मक दोनों पहलुओं को शामिल करना चाहिए और हमें प्रगतिशील विचार और जीवन के नए मूल्य देकर समाज में बदलाव लाना चाहिए। समाज के समाजवादी ढाँचे में जिन महत्वपूर्ण सिद्धांतों पर जोर दिया जाना है, उनमें से एक यह है कि व्यक्तिगत पूर्ति व्यक्तिगत या सामूहिक हितों के प्रति स्वार्थी और संकीर्ण निष्ठाओं के माध्यम से नहीं होगी, बल्कि राष्ट्रीय विकास की व्यापक निष्ठा के प्रति सभी के समर्पण के माध्यम से होगी। आधुनिक भारत में शिक्षा को गलत ढंग से नियोजित और लापरवाही से क्रियान्वित किया गया है। यह भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था के पोषित आदर्शों के खिलाफ है और इसलिए लोगों के मन में भारतीय संस्कृति की सच्ची भावना को फिर से स्थापित करने के लिए हर संभव प्रयास किया जाना चाहिए। विवेकानंद की

शिक्षा का मुख्य आदर्श मानव निर्माण, चरित्र निर्माण और विचारों को आत्मसात करना था। वह महिलाओं के लिए शिक्षा की एक ऐसी योजना को लागू करने के लिए उत्सुक थे जो उन्हें निडर, गरिमा और शुद्धता के प्रति जागरूक बनाए। उनके लिए, महिलाओं के लिए शिक्षा की सबसे अच्छी योजना वह है जो उन्हें एक मजबूत चरित्र विकसित करना सिखाती है जिसके बल पर वे अपना जीवन देने के लिए तैयार होंगी। बल्कि उनकी शुद्धता से एक इंच भी पीछे हटने के बजाय। इसी आध्यात्मिक आदर्श का भारतीय नारी अनादि काल से पालन करती आ रही है। पवित्रता, सरलता, सत्यनिष्ठा और पवित्रता को उन्होंने हमेशा किसी भी भौतिक वस्तु से अधिक महत्व दिया है। स्वामी विवेकानंद महिलाओं को उनके अपने सांस्कृतिक आदर्श की ओर निर्देशित करना चाहते थे। धार्मिक प्रशिक्षण और चरित्र निर्माण उनकी प्राथमिक चिंता होनी चाहिए। उनकी शिक्षा धर्म को अपना केंद्र बनाकर दी जानी चाहिए। हम जवाहरलाल नेहरू और एस राधाकृष्णन के लेखन में विवेकानंद के शिक्षा दर्शन के प्रभाव को देख सकते हैं। जिन्होंने यह विचार व्यक्त किया कि विज्ञान और धर्म को साथ–साथ चलना चाहिए। पाश्चात्य विज्ञान को अध्यात्म से जोड़ना होगा। यह भारतीय शिक्षा की सामग्री के निर्माण में एक सिंथेटिक प्रवृत्ति है जिसे विवेकानंद ने बहुत पहले व्यक्त किया था। मानवता के सार्वभौमिक शिक्षक, विवेकानंद ने पूर्व और पश्चिम दोनों की समस्या को गहराई से महसूस किया। जैसा कि उनके द्वारा निर्धारित समाधान राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दोनों था।

स्वामी विवेकानंद भारत के एक महान राष्ट्रवादी थे, जो धर्म की जीवंतता के माध्यम से राष्ट्र को पुनर्जीवित करना चाहते थे। उनका मानना था कि, धर्म केंद्र का गठन करता है। भारत के राष्ट्रीय जीवन के पूरे संगीत का मुख्य स्वर है। उनमें, हिंदू पुनर्जागरण आत्म–जागरूक और किशोर बन गया। उनका जन्म भारत के इतिहास के ऐसे महत्वपूर्ण दौर में हुआ था, जब भौतिकवाद के प्रचंड ज्वार के कारण उसके सभी उच्च आवेगों पर काबू पा लिया गया। शिक्षित लोग विदेशी आदतों का अनुकरण कर रहे थे क्योंकि उन्हें लगा कि भारत और उसकी प्रगति की समस्याओं का वास्तविक समाधान पश्चिमी तरीकों और संस्थानों की स्वीकृति में है। विवेकानंद ने इसे रोकने की कोशिश की ज्वार, और अपने देशवासियों के सामने वेदांत का शानदार और स्फूर्तिदायक संदेश रखा जिसने पूर्व की आध्यात्मिकता को पश्चिम की सामाजिक सेवा और संगठनात्मक क्षमता की भावना के साथ जोड़ा। यही उनका नव–वेदानवाद का दर्शन है, और जिसके लिए वह पूर्व और पश्चिम की संस्कृतियों के संश्लेषण को प्रभावित करते थे, और इस तरह मानवता के वास्तविक उद्धार का पता लगाते थे। उन्होंने भारतीयों में देशभक्ति की भावना को विकसित करने के लिए बहुत महत्व दिया। मानवीय गरिमा और राष्ट्रीय गौरव। उन्होंने सभी लोगों की समानता के विचार का समर्थन किया, भारतीयों को प्रगतिशील ऐतिहासिक कार्यों को करने की उनकी क्षमता में विश्वास दिलाया और साथ ही उन्होंने अपने धर्मनिरपेक्षता के माध्यम से सार्वभौमिक भाईचारे का प्रचार किया। एक प्रगतिशील भारतीय विचारक के रूप में स्वामी विवेकानंद के विचारों ने भारत के लोगों की देशभक्ति और राष्ट्रीय आत्म चेतना के विकास में सकारात्मक भूमिका निभाई और उन्होंने हमारे राष्ट्रीय संघर्ष में काफी योगदान दिया और उनकी शिक्षाएं जनता को उनके जीवन में प्रेरित करती रहीं। अगले अध्यायों में हम शिक्षा, संस्कृ ति, धर्म और युवा आदर्श के रूप में उनके विचारों का अध्ययन करेंगे।

सन्दर्भः

[i]स्वामीविवेकानंद, http://www.belurmath.org/national_youth_day.htm 2.

[ii] राजपूत, जे.एस. (2011)."भारतीय युवाओं को नैतिक मूल्यों की आवश्यकता", रामकृष्ण मिशन संस्कृति संस्थान, 26/01/2012 को उद्धृत, page 1, http://www.sriramakrishna.org/bulletin/2008Need_for_Moral_Values_to_Indian Youth.pdf

[iii] "स्वामी विवेकानंद का भारत के युवाओं के लिए समाज सेवा का संदेश", 27/01/2012 को उद्धृत, http://rbalu.wordpress.com/2011/02/12/swami vivekananda %E2% 80% 99s-message

[iv] "स्वामी विवेकानंद के उद्धरण", उद्धृत, www.rkmissiondel.org/

[v] राजपूत, जे.एस. (2011)। "भारतीय युवाओं को नैतिक मूल्यों की आवश्यकता", पृष्ठ 06.

[vi] सिरसवाल, देश राज (2011) दर्शनशास्त्र, शिक्षा आईडियाइंडिया.कॉम, पीपी.22-24.

[vii] अनुपमानंद, स्वामी (2013) स्वामी विवेकानंद और मूल्य शिक्षा,माइलस्टोन एजुकेशन रिव्यू, वर्ष 04, नंबर 1, अप्रैल 2013, पीपी। 14-15.

[viii] मेरिना इस्लाम और देश राज सिरसवाल (2013) स्वामी विवेकानंद का दर्शन, सीपीपीआईएस, पिहोवा.

IJOMRC